Date –7 September 2022

भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली

हाल ही में, यह देखा गया है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य एक अलग पेशा है जिसमें विशिष्ट दक्षताओं की आवश्यकता होती है।

भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र का अवलोकन

- भारत की स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली को सार्वजनिक और निजी दो प्रमुख घटकों में वर्गीकृत किया गया है।
- सरकार, यानी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली, प्रमुख शहरों में सीमित माध्यमिक और तृतीयक देखभाल संस्थानों को शामिल करती है और ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी) के रूप में बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करती है।
- निजी क्षेत्र महानगरों और टियर- I और टियर- II शहरों में प्रमुख एकाग्रता के साथ अधिकांश माध्यमिक, तृतीयक और चतुर्धातुक देखभाल संस्थान प्रदान करता है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के बारे में

- एक सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यबल की महामारी और महामारियों से परे भी भूमिका होती है।
    - एक प्रशिक्षित सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यबल यह सुनिश्चित करता है कि लोगों को निवारक और प्रोत्साहक सेवाओं (मुख्य रूप से सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में) के साथ-साथ उपचारात्मक और नैदानिक सेवाओं (चिकित्सा देखभाल के हिस्से के रूप में) की समग्र स्वास्थ्य देखभाल प्राप्त हो।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यों का** वर्णन करने के लिए चार 'A's' (शिक्षाविद, सक्रियता, प्रशासन और वकालत) का उपयोग किया गया है।
    - महामारी विज्ञान और बायोस्टैटिस्टिक्स में एक अच्छी ग्राउंडिंग होने के कारण अकादमिक साक्ष्य निर्माण और संश्लेषण की अच्छी समझ को संदर्भित करता है।
        - ये दक्षताएँ कार्यक्रमों की निगरानी और मूल्यांकन, निगरानी करने और डेटा की व्याख्या करने और नियमित रिपोर्टिंग के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।
- **सक्रियतावाद:** सार्वजनिक स्वास्थ्य स्वाभाविक रूप से 'सामाजिक परिवर्तन' से जुड़ा हुआ है और सक्रियता का एक तत्व सार्वजनिक स्वास्थ्य का मूल है।

- सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए सामुदायिक जरूरतों, सामुदायिक संगठन आदि को समझकर जमीनी स्तर पर सामाजिक लामबंदी की आवश्यकता होती है। इसके लिए सामाजिक और व्यवहार विज्ञान में आधार की आवश्यकता होती है।

- **प्रशासन विभिन्न स्तरों पर स्वास्थ्य प्रणालियों** के प्रशासन को संदर्भित करता है: प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से लेकर जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर तक।
  - इसमें स्वास्थ्य कार्यक्रमों को लागू करना और उनका प्रबंधन करना, मानव संसाधन के मुद्दों को संबोधित करना, आपूर्ति और रसद संबंधी मुद्दों आदि को शामिल करना शामिल है।
  - इसमें कुछ हद तक कार्यक्रम वितरण, टीम निर्माण, नेतृत्व के साथ-साथ वित्तीय प्रबंधन की सूक्ष्म योजना शामिल है।
- **वकालत:** सार्वजनिक स्वास्थ्य में, व्यक्तिगत स्तर पर ऐसा बहुत कम है जो कोई कर सकता है; सरकार के विभिन्न स्तरों पर यथास्थिति को बदलने के लिए प्रमुख हितधारकों के साथ संचार होना चाहिए।
  - इसके लिए आवश्यकता की स्पष्ट घोषणा, कार्यों के वैकल्पिक सेट का विश्लेषण और कार्यान्वयन या गैर-कार्यान्वयन की लागत की आवश्यकता होती है। इस कार्य को करने के लिए अच्छा संचार और बातचीत कौशल महत्वपूर्ण हैं। संबंधित विषय स्वास्थ्य नीति, स्वास्थ्य अर्थशास्त्र, स्वास्थ्य वकालत और वैश्विक स्वास्थ्य हैं।
- **अनुप्रयोग:** इन चार कार्यात्मकताओं को किसी भी विशिष्ट या सामान्य समस्या जैसे पर्यावरण या पोषण या संक्रामक रोग पर लागू किया जा सकता है और अन्य चिकित्सा क्षेत्रों में सुपर-स्पेशलाइजेशन के समान माना जा सकता है। महामारी प्रबंधन के लिए सभी चार दक्षताओं को समान माप की आवश्यकता होती है।
- **प्रशिक्षण:** भारत में इन दक्षताओं में प्रशिक्षण सामुदायिक चिकित्सा में तीन वर्षीय एमडी और सार्वजनिक स्वास्थ्य में दो वर्षीय परास्नातक के माध्यम से प्रदान किया जाता है।
  - पहला विशेष रूप से डॉक्टरों के लिए आरक्षित है (अतिरिक्त वर्ष चिकित्सा देखभाल के प्रावधान के लिए समर्पित है), जबकि दूसरा गैर-चिकित्सा व्यक्तियों के लिए भी खुला है।
  - कक्षा शिक्षण के अलावा, सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशिक्षुओं को समुदायों में और स्वास्थ्य प्रणाली के विभिन्न स्तरों पर तैनात किया जाता है।

प्रमुख मुद्दे

- **खराब समझ:** सार्वजनिक स्वास्थ्य अनिवार्य रूप से बहु-अनुशासनात्मक है और अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग चीजें हैं। बहुतों को इसकी कम समझ है और

वे एक अनुशासन के रूप में सार्वजनिक स्वास्थ्य और सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र के बीच अंतर करने में सक्षम नहीं हैं।

- राज्य या केंद्र सरकार के लिए काम करने वाले सभी सार्वजनिक क्षेत्र के स्वास्थ्य कार्यकर्ता हैं, लेकिन वे सार्वजनिक स्वास्थ्य नहीं कर रहे हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में चिकित्सा देखभाल प्रदान करना व्यक्ति को सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवर नहीं बनाता है।
- विशिष्ट दक्षताओं का अभाव: भारत में राष्ट्रीय, राज्य या जिला स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं के प्रमुखों के लिए आर्थोपेडिक या कार्डियक सर्जन या नेत्र रोग विशेषज्ञ होना आम बात है, जिनके पास सार्वजनिक स्वास्थ्य का कोई प्रशिक्षण नहीं है।
- महामारी के दौरान, सार्वजनिक स्वास्थ्य में बिना प्रशिक्षण वाले कई डॉक्टरों ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर विशेषज्ञ सलाह दी। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह महसूस किया जाता है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए विशिष्ट दक्षताओं की आवश्यकता नहीं होती है।

- **योग्यता संबंधी मुद्दे:** भारत में ऐतिहासिक रूप से, सार्वजनिक स्वास्थ्य का चिकित्साकरण किया गया है क्योंकि यह काफी हद तक एक मेडिकल कॉलेज संचालित अनुशासन था। इसके परिणामस्वरूप नर्सिंग, दंत चिकित्सा और अन्य स्वास्थ्य पेशेवरों को सार्वजनिक स्वास्थ्य में अधिक योगदान देने से वंचित कर दिया गया है।
  - वे सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवर नहीं बनते क्योंकि उनके पास आवश्यक कौशल नहीं हो सकते हैं।
- **अन्य चुनौतियाँ :** स्वास्थ्य क्षेत्र पर खराब व्यय
  - भारत में हाशिए के वर्गों के लिए सस्ती स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं का अभाव है।
  - अस्पतालों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों जैसे मजबूत सार्वजनिक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे का अभाव।
  - देश की जनसंख्या के अनुसार डॉक्टरों और विशेषज्ञों की संख्या का अभाव।
  - लोगों में जागरूकता की कमी

सुझाव

- यह महत्वपूर्ण है कि स्वास्थ्य पेशेवर, सरकार और जनता सार्वजनिक स्वास्थ्य को दक्षताओं के एक विशिष्ट समूह के रूप में पहचानें और इसे वह महत्व दें जिसके वह हकदार हैं।

- स्वास्थ्य मंत्रालय का हाल ही में राज्य, जिला और ब्लॉक स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवरों और स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए कैडर बनाने का प्रस्ताव एक स्वागत योग्य कदम है।
- हालाँकि, यह पर्याप्त नहीं है। प्रदान किए जा रहे सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण की गुणवत्ता पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। केवल यह सर्वोत्तम और प्रतिभाशाली लोगों को इस अनुशासन में आकर्षित करेगा, जो देश के स्वास्थ्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक सबक है जो हमें महामारी से सीखना चाहिए।
- प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक स्वास्थ्य देखभाल के तीनों स्तरों पर ध्यान केंद्रित करने की तत्काल आवश्यकता है, यह जरूरी है कि सरकार प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल को सार्वजनिक भलाई के रूप में सुधारे।
- स्वास्थ्य पर खर्च में वृद्धि की आवश्यकता है ताकि भारत मौजूदा सुविधाओं में सुधार कर सके और साथ ही उनमें और अधिक जोड़ सके।

रवि सिंह

एसवाईएल नहर विवाद।

YOJNA IAS

एसवाईएल नहर विवाद।

संदर्भ – सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को पंजाब राज्य से आश्वासन दिया कि मुख्यमंत्री भगवंत मान अपने हरियाणा समकक्ष मनोहर लाल खट्टर से इस महीने के भीतर सतलुज-यमुना लिंक नहर के निर्माण पर चर्चा करने के लिए मुलाकात करेंगे, जो दो दशकों से खराब है।

सतलज यमुना नहर विवाद-

- पंजाब , हरियाणा राज्य विभाजन के समय 1966 से ही जल विवाद प्रारंभ हो गया था।
- राज्य बंटवारे के 10 वर्ष बाद सतलज यमुना नहर बनाने की बात प्रारंभ हो गई थी। 24 मार्च 1976 को केंद्र सरकार ने 7.2 MAF(मिलियन एकड़ फीट) से 3.5 MAF हरियाणा को देने की अधिसूचना जारी की थी। जिसके बाद पंजाब के किसान असंतुष्ट हो गए।

- 1981 में पुनः समझौता हुआ।
- 8 अप्रैल 1982 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 214 किमी लम्बी नहर जो 122 किमी. पंजाब व 92किमी. हरियाणा के क्षेत्र में है का उद्घाटन किया। लेकिन किसानों के आंदोलनों से नहर का काम रोक दिया गया।
- 1987 में पंजाब और हरियाणा 5 MAF और 3.83 MAF की वृद्धि के साथ जल आबंटित करने की सिफारिश की गई।
- 2002 में सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब सरकार से राज्य में नहर का निर्माण 31 जनवरी 2003 तक पूर्ण करने के निर्देश दिए।
- 2004 में CPWD को परियोजना कार्य को संभालने के लिए नियुक्त किया था।
- 2016 में पंजाब सरकार के सभी समझौतों को समाप्त करने के विधेयक(पंजाब टर्मिनेशन ऑफ एग्रीमेंट एक्ट, 2004) को सर्वोच्च न्यायालय ने खारिज कर दिया। और हरियाणा सरकार ने अपने क्षेत्र के कार्य में तेजी की।
- 2020 में न्यायालय ने केंद्र सरकार की मध्यस्थता के साथ दोनों राज्यों को आपस में SYLमामले को सुलझाने के निर्देश दिए हैं।

पंजाब में नदी तंत्र–पंजाब ऐसा राज्य है जहाँ पर पाँच नदियाँ मुख्य रूप से बहती हैं जो कि है झेलम, चेनाब, रावी, व्यास और सतलज और इन्ही पाँच प्रमुख नदियों के बहने के कारण ही इसे पंजाब कहते हैं|

- **झेलम-** इस नदी की कुल लंबाई 725 किलोमीटर और इसका उद्गम स्थल शेषनाग (जम्मू कश्मीर) में है|झेलम का वास्तविक नाम वितस्ता है|यह नदी पाकिस्तान चिनाब नदी में मिलती है|
- **चिनाब-** इस नदी की कुल लंबाई 960 किलोमीटर है| इस नदी का उद्गम स्थल बारालाचा दर्रा है| भुट नाला, मियार नाला, थिरोट, सोहल, मारुसुदर और लिद्रारी नदी आदि चेनाब की प्रमुख सहायक नदियाँ है| बगलीहार हाईडल पॉवर प्रोजेक्ट इसी नदी पर बना है|
- **व्यास** – इस नदी की कुल लंबाई 470 किलोमीटर है| इस नदी का उद्गम स्थल व्यास कुंड (हिमाचल प्रदेश) है| व्यास नदी का पुराना नाम विपाशा था| गज, पार्वती, चक्की नदी आदि व्यास की प्रमुख सहायक नदियाँ है| यह नदी आगे चलकर सतलज नदी में मिल जाती है|
- **सतलज** – इस नदी की कुल लंबाई 1500 किलोमीटर है| भारत मे इस नदी की लंबाई 1050 किलोमीटर है। इस नदी का उद्गम स्थल मानसरोवर झील के पास रक्षताल में है|ऋग्वेद में नदी को शुतुद्रि नाम से सम्बोधित किया गया है। व्यास

नदी, बासपा नदी, स्पीति नदी, खड्डु नदी ,स्वां नदी आदि सतलज की प्रमुख सहायक नदियाँ है|

- **रावी**– इस नदी की कुल लंबाई 720 किलोमीटर है| इस नदी का उद्गम स्थल रोहतांग दर्रा (हिमाचल प्रदेश) है| यह नदी आगे चलकर चेनाब नदी में मिल जाती है।

पंजाब सरकार के तर्क- पंजाब राज्य 79% हिस्सा कृषि क्षेत्र है जो सिंचाई के लिए पानी की आवश्यकता को पहले ही बढ़ा देता है। पंजाब के अनुसार राज्य के बंटवारे के समय राज्य के संसाधनों के बँटवारा 60-40 के अनुपात के साथ हुआ है। तो यमुना के जल का भी इसी अनुपात के साथ बंटवारा हो।

हरियाणा सरकार का तर्क- हरियाणा में भूजल के अत्यधिक दोहन व धान व गेहूँ के फसल चक्र के कारण भूजल का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। 1976 से 2010 तक कई जगहों पर पानी का स्तर 15-25 मीटर नीचे तक गिर चुका हैं।

वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय ने पंजाब व हरियाणा सरकार को जल विवाद को सुलझाने के सख्त निर्देश दिए हैं।

गुंजन जोशी

भारत बांग्लादेश द्विपक्षीय वार्ता

भारत बांग्लादेश द्विपक्षीय वार्ता

बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना 4 दिवसीय भारत यात्रा पर है। पीएम मोदी और पीएम शेख हसीना द्वारा प्रमुख कनेक्टिविटी और विकास परियोजना शुरू की गई। 06 सितम्बर 2022 को भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने विभिन्न MOU, व समझौते पर हस्ताक्षर किए।

भारत बांग्लादेश समझौता ज्ञापन(MOU)

- भारत के जल शक्ति मंत्रालय और बांग्लादेश के जल संसाधन मंत्रालय ने कुशियारा नदी के लिए एक अंतरिम जल बंटवारा समझौते पर हस्ताक्षर किए। दोनों नेताओं ने 1996 के बाद से देशों के बीच इस तरह की पहली व्यवस्था में कुशियारा नदी के पानी को साझा करने पर सहमति व्यक्त की। जब बराक कुशियारा और सूरमा में अलग हो जाता है। कुशियारा का पानी इस प्रकार भारत में नागालैंड राज्य में उत्पन्न होता है और मणिपुर, मिजोरम और असम से सहायक नदियों को उठाता है।
- भारत के रेल मंत्रालय और बांग्लादेश के रेल मंत्रालय ने दो MOU पर हस्ताक्षर किए।

1. बांग्लादेश रेलवे का प्रशिक्षण कार्यक्रम भारत में हो पाएगा।
2. बांग्लादेश रेलवे को IT प्रणाली जैसे FOIS और अन्य IT अनुप्रयोगों का सहयोग दिया जाएगा।

- राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी भारत और बांग्लादेश के न्यायालय द्वारा भारत में रह रहे बांग्लादेशी न्यायिक अधिकारियों के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण हेतु एक ज्ञापन ।
- भारत के विज्ञान एवं औद्योगिकअनुसंधान परिषद (CSIR) और बांग्लादेश के विज्ञान एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद(BCSIR) ने वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक सहयोग के लिए।
- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भागीदारी के लिए ज्ञापन।
- भारत के दूरसंचार विभाग प्रसार भारती और बांग्लादेश के दूरदर्शन विभाग द्वारा प्रसारण में भागीदारी हेतु ज्ञापन।

विकास परियोजनाएँ-

मैत्री पावर प्लांट – भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व बांगलादेश के प्रधानमंत्री शेख हसीना ने 1320 मेगावाट **मैत्री पावर प्लांट** का उद्घाटन किया।मैत्री सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट, बांग्लादेश के रामपाल में कोयले से चलने वाला बिजली स्टेशन है। बिजली संयंत्र **बांग्लादेश इंडिया फ्रेंडशिप पावर कंपनी (बीआईएफपीसीएल)** द्वारा विकसित किया जा रहा है, जो भारत के सरकारी नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन (एनटीपीसी) और बांग्लादेश पावर डेवलपमेंट बोर्ड (बीपीडीबी) के बीच 50:50 का संयुक्त उद्यम है।

रुपशा सेतु का उद्घाटन– रूपशा रेल ब्रिज, खुलना-मोंगला पोर्ट रेल लाइन परियोजना का हिस्सा है, जिसे बांग्लादेश सरकार को दी गई भारत सरकार लाइन ऑफ क्रेडिट (एलओसी) के तहत लिया जा रहा है, 25 जून 2022 को पूरा किया गया था। रूपशा रेल ब्रिज 5.13 किलोमीटर है। भारतीय ईपीसी ठेकेदार मेसर्स एलएंडटी द्वारा निर्मित ब्रॉड-गेज सिंगल-ट्रैक रेलवे पुल और एक रेल लाइन के माध्यम से खुलना को मोंगला बंदरगाह शहर से जोड़ा गया है।

पुल का निर्माण रूशपा ज्वारीय नदी पर किया गया है, और यह एक चुनौतीपूर्ण इंजीनियरिंग उपलब्धि थी क्योंकि इसमें पाइलिंग कार्य के लिए विशेष आधार ग्राउटिंग तकनीक की आवश्यकता थी। वायडक्ट सेक्शन पर 856 पाइल फ़ाउंडेशन का निर्माण किया गया और 72 मीटर की औसत पाइल लंबाई के साथ स्टील ब्रिज सेक्शन के लिए 72 पाइल फ़ाउंडेशन का निर्माण किया गया। नदी में नेविगेशन सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पुल में अतिरिक्त विशेषताएं भी हैं जैसे कि नेविगेशन फेंडर पाइल्स अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम घाट। मुख्य पुल के लिए नौवहन निकासी मानक उच्च जल स्तर (SHWL) से 18 मीटर से अधिक है। स्टील ब्रिज सुपरस्ट्रक्चर के लिए निर्माण सामग्री भारत से सड़क, समुद्र और अंतर्देशीय नदियों का उपयोग करके आयात की गई थी।

भारत सरकार ने बांग्लादेश सरकार को 7.862 बिलियन अमरीकी डॉलर मूल्य के चार एलओसी प्रदान किए हैं। इन एलओसी के तहत अब तक 42 परियोजनाएं शुरू की गई हैं, जिनमें से 14 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं।

खुलना दर्शन रेलवे लाइन लिंक परियोजना– यह परियोजना मौजूदा (ब्रॉड गेज दोहरीकरण) बुनियादी ढांचे का उन्नयन है, जो गेदे-दर्शन पर मौजूदा सीमा पार रेल लिंक को खुलना से जोड़ती है, जिससे दोनों देशों के बीच विशेष रूप से ढाका के बीच रेल संपर्क की अनुमति मिलती है। परियोजना की लागत 312.48 मिलियन अमेरिकी डॉलर आंकी गई है। मोंगला-खुलना रेलवे लाइन को भारत सरकार लाइन ऑफ क्रेडिट (LOC) द्वारा वित्त पोषित किया गया।

पार्बतीपुर- कौनिया रेल- सरकार दिनाजपुर में बिराल सीमा के माध्यम से क्षेत्रीय रेल संपर्क स्थापित करने के लिए रेल ट्रैक के पार्बतीपुर कौनिया खंड का उन्नयन होगा। इस संबंध में दिनाजपुर के पार्बतीपुर से 57 किमी रेल ट्रैक को दोहरे गेज रेल ट्रैक से रंगपुर के कौनिया तक अपग्रेड करने के लिए 1683 करोड़ रुपये की परियोजना शुरु की जा रही है।

गुंजन जोशी

डार्क स्काई रिजर्व

खगोल विज्ञान पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए लद्दाख में होगा भारत का पहला 'डार्क स्काई रिजर्व'

संदर्भ– विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ जितेंद्र सिंह ने शनिवार को घोषणा की, 2022 के अंत तक, भारत लद्दाख के ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्रों में देश का पहला डार्क स्काई रिजर्व स्थापित करेगा। उन्होंने कहा कि यह सुविधा खगोल विज्ञान-पर्यटन को भी बढ़ावा देगी।

डार्क स्काई रिजर्व क्या है?

एक डार्क स्काई रिजर्व सार्वजनिक या निजी भूमि है जिसमें एक विशिष्ट रात का वातावरण और तारों वाली रातें होती हैं जिन्हें प्रकाश प्रदूषण को रोकने के लिए जिम्मेदारी से विकसित किया गया है।

इंटरनेशनल डार्क स्काई एसोसिएशन (आईडीएसए) की वेबसाइट के मुताबिक, इन भंडारों में आकाश की गुणवत्ता और प्राकृतिक अंधेरे के लिए न्यूनतम मानदंडों को पूरा करने वाला मुख्य क्षेत्र और कोर में अंधेरे आकाश संरक्षण का समर्थन करने वाला एक परिधीय क्षेत्र शामिल है। यह भण्डार कई भूमि प्रबंधकों की साझेदारी के माध्यम से बनाया गया है, जिन्होंने नियमों और दीर्घकालिक योजना के माध्यम से प्राकृतिक रात के वातावरण के मूल्य को मान्यता दी है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ जितेंद्र सिंह ने शनिवार को घोषणा की, 2022 के अंत तक, भारत लद्दाख के ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्रों में देश का पहला डार्क स्काई रिजर्व स्थापित करेगा। उन्होंने कहा कि यह सुविधा खगोल विज्ञान-पर्यटन को भी बढ़ावा देगी।

'डार्क स्काई रिज़र्व' कैसे बनती है?

व्यक्ति या समूह इंटरनेशनल डार्क स्काई एसोसिएशन (IDSA) के प्रमाणन के लिए पाँच साइट में से किसी साइट को नामांकित कर सकते हैं। अर्थात् इंटरनेशनल डार्क स्काई पार्क, समुदाय, रिजर्व, अभयारण्य और शहरी नाइट स्काई प्लेस।

प्रमाणन प्रक्रिया एक साइट के समान है जिसे यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल टैग से सम्मानित किया जा रहा है या बायोस्फीयर रिजर्व के रूप में मान्यता प्राप्त है। आईडीएसए ने कहा कि

2001 और जनवरी 2022 के बीच, वैश्विक स्तर पर 195 साइटों को अंतर्राष्ट्रीय डार्क स्काई प्लेस के रूप में मान्यता दी गई है।
आईडीएसए भूमि के एक टुकड़े को डार्क स्काई प्लेस के लिए तभी उपयुक्त मानता है-

- जब वह सार्वजनिक या निजी स्वामित्व वाला हो।
- वर्ष के दौरान आंशिक रूप से या पूरी तरह से जनता के लिए सुलभ है;
- भूमि वैज्ञानिक, प्राकृतिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, विरासत और/या सार्वजनिक आनंद के उद्देश्यों के लिए कानूनी रूप से संरक्षित है;
- भूमि का मुख्य क्षेत्र समुदायों और इसके आसपास के शहरों के सापेक्ष एक असाधारण डार्क स्काई संसाधन प्रदान करता है,
- और भूमि आरक्षित, पार्क या अभयारण्य के लिए निर्धारित रात्रि आकाश चमक प्रदान करती है।
- भारत अभी भी आइएसडीए में अपना नाम दर्ज कराने की प्रक्रिया में है।

भारत का पहला डार्क स्काई रिजर्व हेतु स्थान

लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश प्रशासन देश के पहले डार्क स्काई रिजर्व की स्थापना के प्रयासों में अग्रणी है। समुद्र तल से 4,500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित होने के लिए, हानले डार्क स्काई रिजर्व (HDSR) **चांगथांग वन्यजीव अभयारण्य** के भीतर आएगा।

परियोजना के लिए लद्दाख को क्यों चुना गया?

- लद्दाख एक अनोखा ठंडा रेगिस्तान है जो समुद्र तल से लगभग 3,000 मीटर ऊंचे पहाड़ी इलाकों में स्थित है। न्यूनतम तापमान के साथ लंबी और कठोर सर्दियाँ माइनस 40 डिग्री सेल्सियस तक गिरती हैं, जिससे यूटी के बड़े हिस्से अत्यधिक रहने योग्य हो जाते हैं।
- यह शुष्कता, सीमित वनस्पति, उच्च ऊंचाई और विरल आबादी वाले बड़े क्षेत्र – सभी इसे दीर्घकालिक खगोलीय वेधशालाओं और अंधेरे आकाश वाले स्थानों के लिए एकदम सही जगह बनाते हैं।

गुंजन जोशी